# पंचम अध्याय

## घरौन्दा नाटक का शिल्प

## पंचम अध्याय

## घरौंदा नाटक का शिल्प

### " घरौन्दा " ( १९७४-७५ )

प्रास्ताविक -

सन १९७४ में डॉ.शेष के जीवन ने एक नया मोड लिया । डॉ.शंकर शेष ने सन १९७४ में मध्यप्रदेश की शासकीय सेवा से इस्तिफा देकर भारतीय स्टेट बैन्क के बंबई स्थित कार्यालय में राजभाषा विभाग के मुख्याधिकारी की हैसियत से पदभार सँभाला । बंबई जैसे महानगर में आने के हर अवसर का लाभ उठाते हुए डॉ.शेष ने आकाशवाणी, रंगमंच, चित्रपट जैसे विभिन्न क्षेत्रोंमें नये सिरे से प्रवेश कर अपनी मेधावी बुद्धि के दर्शन कराये । यहाँ आते ही उन्होंने रंगमंचीय विश्व के साथ संपर्क स्थापित कर देखते-ही देखते अपने आप को यहाँ के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग बना डाला । समवत: डॉ.शेष अपनी क्षमताओं के लिए अधिक व्यापक क्षेत्र चाहते हों और इसलिए बंबई की ओर आकृष्ट हुए हैं । आगे के सात सालों में शेष ने जिस सृजनक्षमता का परिचय दिया है, उससे भी यह स्पष्ट हो जाता है ।

बंबई आनेपर प्रारंभ में उन्हें अपने लिए मकान की व्यवस्था करने में बहुत दौड-धूप की । कई संकटों का सामना करना पडा । अत: हो सकता है, अपने निजी अनुभवों ने महानगरों की निवास व्यवस्था की जटिल समस्या की गहराई की ओर उनका ध्यान खींचा हो । इसका पूरा प्रतिबिंब 'घरौन्दा' नाटयकृति के रूप में सामने आया । प्रारंभ में इसका शीर्षक 'अनिकेत' था । इस संदर्भ में डॉ.विनय का कथन दृष्टव्य है -- " बंबई की चित्रनगरी ने भी शेष जी के नाटकों का स्वागत किया । उनका 'अनिकेत' नाटक जो 'घरौन्दा' के नाम से प्रकाशित है । भीमसेन द्वारा फिल्म के लिए चुना गया 'घरौन्दा' के नाम से इस चित्र का निर्माण हुआ है ।"[१]

---

१ डॉ.विनय : डॉ.शेष कृत - बाढ का पानी - पृ.७ ।

'घरौन्दा' के लेखन काल के संबंध में भी निश्चित रूप से कहना कठिन है। डॉ.लवटे ने लिखा है -- 'बंबई में उन्होंने अपने नये नाटक 'घरौन्दा' (१९७४) का प्रयोग किया[२]।' परंतु नाटक विवेचन के अंतर्गत इसका लेखन काल १९७४ दर्ज किया है।'[३] संभवत: इसका लेखन सन १९७४ के अंतिम चरण में हुआ हो। और तुरंत प्रयोग के लिए भी लिया गया हो। कारण डॉ.शेष बंबई में भले ही नये हो, उनका नाटककार बंबई में इस क्षेत्र में परिचित था। इस दृष्टि से उनके अंतरंग मित्र डॉ.विनय का कथन दृष्टव्य है -- 'बंबई आने से पूर्व उनका नाटककार बंबई में विद्यमान था। 'खजुराहों का शिल्पी' का मंचन हो चुका था, एक और द्रोणाचार्य' की चर्चा थी। बंबई में शेष जी के नाटकों के लिए एक नया मंच मिला।'[४] अत: लेखन के तुरन्त बाद ही इसका मंचन हुआ हो।

इस कृति के प्रथम प्रकाशन के संबंध में भी जानकारी प्राप्त नहीं है। द्वितीय संस्करण पराग प्रकाशन, दिल्ली द्वारा १९८४ में सामने आया।

प्रस्तुत कृति में नाटककारने अपनी ओर से अंक विभाजन की दृष्टि से कोई संकेत नहीं दिया है। प्रकाशित संस्करण में स्वीकृत पध्दति से लगता है कि इसे दो भागों में या अकों में या दृश्यों में बाँटा जा सकता है। कारण पृष्ठ ९ से ४९ तक सभी घटनाएँ दफ्तर में घटती हैं, तो पृष्ठ ५० से ८८ तक की घटनाएँ मोदी के घर पर। नाटक का पूरा कलेवर ८० पृष्ठों में समाया है। दृश्य-परिवर्तन के लिए छाया-प्रकाश की युक्ति बार-बार अपनायी गई है, जैसे फिल्म के छोटे-छोटे दृश्य हो। संभवत: डॉ.शेष रंगमंचपर फिल्मी तंत्र का प्रयोग करना चाहते हो। अत: इस नाटक की इसी सफलता से प्रभावित भीमसेन इस पर बहुचर्चित फिल्म बना चुके है।

---

२ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - नाटककार शंकर शेष - पृ.१५।

३ डॉ. - वही पृ.५२।

४ डॉ.विनय - डॉ. शेष कृत - बाढ का पानी, - पृ.७।

## "घरौन्दा" नाटक का शिल्प --

### कथावस्तु --

#### पूर्वार्द्ध :

मोदी अँड कंपनी का दफ्तर । प्रत्येक कर्मचारी दफ्तर के काम के अलावा दूसरा काम कर रहा है । सुदीप को फोन पर सूचना मिलती है कि वह रूम पर दस बजे तक न लौटे,क्योंकि चोपडा अपनी गर्ल फ्रेंड को ला रहा है । बडे बाबू कंपनी के फोन पर व्यक्तिगत बातों के लिए सुदीप को टोकते हैं । परंतु तुरंत बाद स्वय पत्नी द्वारा दी गई सूचनाओं को सुनते रहते हैं । कंपनी में बडे बाबू की साली के स्थानपर छायानामक लडकी की नियुक्ति हो जाने से बडे बाबू बौखलाए हैं ।

कुछ समय बाद मोदी आता है तथा छाया भी नियुक्ति पत्र लेकर पहुँचती है । उसे अपना टेबल दिखाकर काम दे दिया जाता है । चार बजने तक भी छाया अपना काम पूरा नहीं कर पाती,तब सुदीप उसकी सहायता करता है । परंतु छाया के टायपिंग में इतनी गलतियाँ रहती हैं कि बडे बाबू उसे फिरसे टाईप करने के लिए कहते हैं । समय का तकाजा न होने से सुदीप भी उसकी मदद के लिए रुकता है ।

अब छाया सुदीप में बाते चलती हैं । दोनों भी अविवाहित हैं । कोई विशेष हितैषी नहीं हैं । मालिक के संबंध में सुदीप से पता चलता है कि मोदी की पहली पत्नी मर गई है । वह मनमौजी है और दिल का मरीज है दो दौरे आ चुके हैं । छाया बताती है कि नियुक्ति के समय वह दो मिनट ही कमरे में थी । मालिक ने उसे देखा भर था और नियुक्त किया था । बाद में काम पूरा कर दोनों निकल पडते हैं ।

एक साल बीत जाने के बाद । छाया और सुदीप एक-दूसरे की ओर आकर्षित हुए हैं । मोदी छाया की तारीफ करता रहा है । बडे बाबू सुदीप को ओव्हरटाईम काम करने के लिए कहते हैं तब छाया और सुदिप में मकान की समस्या पर बातें होती हैं । छाया मकान प्राप्ति के बाद शादी करना चाहती है तो सुदीप इसके पहले ही एक्का आना चाहता है जिसके लिए छाया तैयार नहीं है । सुदीप

किसी चाल में किराये पर कमरा लेने का रास्ता सुझाता है,पर छाया अपना घर चाहती है। घर के लिए संघर्ष करने की उनकी तैयारी है। वह पैसे बचाकर ओनरशिप फ्लॅट लेना चाहती है।अत: दोनों चाय,सिगरेट,नाटक,सिनेमा आदि में कटौती कर पैसे बचाना प्रारंभ करते हैं।

कुछ दिनों बाद बडे बाबू एक ग्रेट न्यूज सुनाना चाहते हैं और कर्मचारियों को उसकी कल्पना करने के लिए कहते हैं। लेकिन लोकल में बैठने के लिए जगह मिलना, दो किलो बासमती चावल मिलना,बीवी का मायके जाना,धरवाली के लिए इंपोर्टेड साडी खरीदना या धर्मेन्द्र से मुलाकात होना,इनके अलावा किसी की कल्पना उडाने नहीं भर सकती। तब बडे बाबू बताते हैं कि सुदीप को प्रमोशन मिला है,जिससे माहवार सात रुपये सत्ताइस पैसों का लाभ उसे हो जाएगा। इस पर सभी सुदीप से चाय पार्टी मॉगते है,पर छाया इन्कार करती है। सुदीप समय को गुजरता देख बौखलाहट से भरता जाता है। वह छाया को मध्यवर्गीय नैतिकता से ग्रसित मानता है,पर छाया अपने विचारोंपर अटल है।

इसी समय गुहा फोन पर बताता है कि बोरिवली में एक बिल्डर मकान बनवा रहा है। पहले आठ हजार ॲडव्हान्स और बाकी ३० हजार किश्तों में देने हैं। छाया के अपने बचाये चार हजार,चेन-चुडियों के एक हजार,सुदीप की अंगूठी, घडी,ट्रॅजिस्टर आदि के एक हजार,दोनों का दीपावली ॲडवान्स पॉच सौ और बची हुई रकम के लिए पठान से कर्जा ले कर दोनों आठ हजार ॲडव्हान्स की तैयारी करते हैं।

समय गुजर रहा है।मिश्रा सुदीप को छाया के भाग्यवान होने का भविष्य बताता है। छाया को पता चलता है कि वह मोदी की मृत पत्नी जैसी दिखती है अत: मोदी उसे देखता रहता है।

फ्लॅट के लिए पैसे दिये जा चुके हैं छाया,सुदीप मकान सजाने की योजना बना रहे हैं। तभी चोपडा का फोन आता है कि वह बिल्डर भाग गया है,तथा गुहा ने रेल्वे के नीचे आत्महत्या कर ली है। गुहा की पत्नी को चिट्ठी सुदीप की जेब में है। दोनों उसे पढते हैं। गुहा की पत्नी के अपने घर के सपने उससे प्रकट

होते हैं । तब छाया बेचैन होती है । फ्लॅट की कल्पना छोड वह किराये के कमरे में भी गृहस्थी सजाने के लिए तैयार होती है और मकान की पगडी के लिए नये सिरे से पैसों का बचाना शुरु होता है । दूसरी बार पास बुक में जमा रकम छाया का भाई गोविन्द अमेरिका जाते वक्त ले जाता है तो तिसरी बार मकान मालिक अपनी बेटी के दहेज के लिए आठ हजार खा जाता है । इसी बीच मोदी छाया के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है ।

इस प्रकार अपने सपनों को उजडते देख सुदीप का दिमाग षड्यन्त्र रचने लगता है । वह सब को षड्यन्त्रकारी ही मानने लगता है । वह छाया को मोदी से शादी करने का सुझाव देता है । मोदी की जिंदगी का भरोसा नहीं है । वह कभी भी मर सकता है । अत: वह कहता है कि मोदी की मृत्यू के बाद हमारी समस्याएँ खत्म हो जाएँगी और बाद में हम शादी कर लेंगे । परंतु इस सुझाव को ठुकरा कर क्रुद्ध छाया निकल जाती है ।

उत्तरार्ध --

कई दिनों अंतराल । छाया मिसेस मोदी बन चुकी है । उसने अपनी कल्पना के अनुसार घर सजाया है,परंतु मोदी बताता है कि उसने हूबहू पहली पत्नी सरला के समान ही सबकुछ किया है । दोनों में बहुत सारी समानताएँ है । सरला के प्रथम आगमन के समय के समान ही,अब भी छाया के घर में आने पर,मोदी को पाँच लाख का मुनाफा हो जाता है । सरला से की जानेवाली यह तुलना छाया को अच्छी नहीं लगती थी,पर मोदी समानता बिना बताए नहीं रहता । किसी मिटींग के लिए मोदी के चले जाते ही सुदीप फोन पर सूचित कर वहाँ पहुँचता है ।

सुदीप छाया को अपने षड्यन्त्र की याद दिला रहा है तभी मोदी के फॅमिलि डॉक्टर बंसल का फोन आता है । वह सुझाता है कि मोदी को हर किस्म के एक्साइटमेन्ट से बचाना आवश्यक है । इसे सुदीप सुनहरा मौका मान मोदी की जल्द मृत्यु का रास्ता ही बनाना चाहता है । छाया कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करती ।

जब कॉल-बेल बजती है, तब विद्याविहार वालों को देने के लिए निकाले पैसों को सुदीप खान का कर्जा चुकाने के लिए उठाता है और पिछले दरवाजोसे निकल जाता है। मिटींग के लिए गया मोदी इरादा बदलकर वापस लौटा है। वह भावावेश में छाया को अलिंगन बद्ध करता है,परंतु छाया अपने प्यार के अधिकार से उसे रोकती हुई दवा-पानी की याद दिलाती है। इस घटना से मोदी के मन का बचा-खुचा संशय भी नष्ट होता है। अब उसे लगता है कि छाया मोदी की संपत्ति को नहीं स्वयं मोदी को चाहती है। परंतु छाया कहती है कि यह बात तो समय ही सिद्ध कर देगा।

कुछ दिनोंके बाद। छाया गीत गाती हुई कमरा ठीक कर रही है। मोदी वह गीत टेप कर रहा है। दोनो खुश हैं। डॉ.बंसल भी मोदी के रिपोर्टस नॉर्मल होने की खबर देता है। दोनों शाम को मंदिर जाने का निश्चय करते हैं।

इसके बाद सुदीप पहुँचता है। वह मोदी की तंदुरुस्ती की खबरें सुनकर बेचैन होता है। वह छाया को अपनी योजना की याद दिलाता है। तब छाया स्पष्ट कहती है कि तुम जैसे बुजदिल का साथ न देने का निर्णय तो मैंने उस दिन ही कियाथा,जिस दिन तुमने यह षड्यन्त्र का रास्ता सुझाया था। उस दिन यदि वह फिर से जूझने का निर्णय लेता तो मोदी से विवाह करने का प्रश्न ही नहीं उठता था। दोनों जुझाते हुए अपने सपने पूरे करते। परंतु सुदीप षड्यन्त्र और छल कपट का आश्रय ले मोदी की मौत पर जब उतर आया,तब छाया घृणा से भर उठी थी।इस बार छाया उसे पैसे देती है,पर स्पष्ट करती है कि इसके बाद उससे उसे पैसे नहीं मिलेंगे।

सुदीप के चले जाने पर बडे बाबू एक फाईल लेने पहुँचते हैं। उनकी साली की नियुक्ति करवाने के लिए वे छाया को धन्यवाद देते हैं। अन्य बातों में वे बताते है कि सुदीप पूरा शराबी बन चुका है तथा ऑफिस भी नहीं आता है। छाया उसकी मदद करते रहने के लिए बडे बाबू से कहती है।

कई दिनों के बाद। मोदी को डॉक्टर से खुशखबरी मिलती है कि वह बाप बनने जा रहा है। अब सरला की यादें धुँधली पड रही हैं। मानो सरला छाया से एकाकार हो चुकी है। उसके अत्याधिक प्यार ने ही तो उसे अपाहिज बना डाला

था । वह खुशी से बाहर चला जाता है ।

तभी मिश्रा आते हैं और सुदीप की बरबादी का आरोप छाया पर लगाते हैं । तब छाया बताती है कि उस घर की लड़ाई में तीन चौथाई नुकसान उसने उठाया था । सुदीप की नौकरी से निकालने में छाया का कोई हाथ नहीं है । इस असलियत को जान मिश्रा भौचक्के रह जाते हैं और निकल जाते हैं ।

शाम के वक्त मोदी छाया को एक लिफाफा देता है उसमें मोदी को वसीयत है और उसने सारी जायदाद छाया और होनेवाले बच्चे के नाम कर दी है । इस बात से छाया क्रुद्ध है और उस वसीयत को फाडने के लिए कह देती है ।

सुदीप का विषय निकलने पर मोदी बताता है कि डिसिप्लिन के लिए उसे निकाला गया है और फिर कंपनी में उसे वापस लेना असंभव है । बाद में मोदी के जरीवाल की कंपनी में सुदीप को नौकरी दिलवाता है ।

जब छाया चाय बनाने अंदर जाती है तब दयाराम छाया के नाम आयी एक चिट्ठी मोदी को देता है । असमंजस में पडा मोदी अंत में चिट्ठी पढता है और निराशा से निढाल हो जाता है ।मोदी को इस अवस्था में देख छाया घबरा जाती है । उसे कंपनी के घाटे की आशंका होती है तब मोदी उसे वह चिट्ठी देता है ।

छाया चिट्ठी पढती है । सामने टेबल पर पडे वसीयतनामे को उठाकर फाड डालती है । तिजोरी तथा घर की चाभियाँ मोदी के सामने रख,घर से निकल जाना चाहती है ।मोदी के पूछने पर वह बताती है कि अविश्वास के वातावरण में वह रहना नहीं चाहती पहले तो छाया की चिट्ठी उसे पढनी नहीं चाहिए थी फिर जब पढी थी,तब फाडकर फेंकनी चाहिए थी । कारण सुदीपने अपने शाल्यन्त्र के बारेमें लिखकर नये सीरे से जिन्दगी की शुरुवात करने का अपना निश्चय उसमें प्रकट किया था तथा बुजदिली दिखाने के लिए क्षमा चाही थी । इसमें छाया कतई दोषी नहीं थी । अब मोदी सच्चाई को सही माने में समझा जाता है । अंत में अपने प्यार के अधिकार में मोदी छाया को वापस मुडने के लिए कहता है ।मोदी की यह निश्चलता देख छाया दौडकर मोदी से लिपट जाती है ।

चरित्रचित्रण --

डॉ.शंकर शेष ने चरित्र-चित्रण की दृष्टि से `घरौन्दा` को सुक्ष्मता से पेश करने का प्रयत्न किया है नाटक में नाटककारने केवल आठ ही प्रत्यक्ष पात्रों को प्रस्तुत किया है। सुदीप,बडे बाबू,मिश्रा,सोडावाला,मोदी,दयाराम,छाया तथा गोविन्द आदि पात्रों का चरित्र `घरौन्दा` में चित्रित किया है। इन सभी पात्रों में केन्द्रीय पात्र हैं छाया ,सुदीप और मोदी। नाटक के सभी पात्रों में सहजता तथा स्वाभाविकता है। पात्रों में जितनी सहजता तथा स्वाभाविकता,`घरौन्दा` नाटक में हमें दिखाई देती है,उतनी नाटककार के अन्य नाटकों में दिखाई नहीं देती।

नाटक के प्रमुख पात्र छाया,सुदीप तथा मोदी के चारित्रिक विशेषताओं का हम यहाँ विवेचन करते हैं।

छाया -

डॉ.शंकर शेष का `घरौन्दा` नाटक नायिका प्रधान है। इस नाटक की नायिकाहै छाया। छाया के चरित्र की बहुत सारी विशेषताएँ हमारे सामने आती हैं। ये विशेषताएँ इस तरह हैं ---

छाया का पारिवारिक जीवन--

छाया वह मध्यवर्गीय परिवार की नारी है। इस परिवार में कुलमिलाकर छः लोग रहते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे किसी अच्छी सोसायटी में रह नहीं सकते थे। अतः वे बंबई के किसी चाल में किराये के मकान में रहा करते हैं। छोटे से कमरे में छः सदस्य रहने के कारण उनमें आत्मीयता का लोप हो गया था। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण छाया नौकरी करती है। कभी कभी ऑफिस में ज्यादा काम होने के कारण छाया को घर वापस आने में देर होती है। लेकिन घर का एक भी सदस्य उसका इंतजार नहीं करता बैठता। रहने के लिए छोटीसी जगह होने के कारण मानो आपस का प्यार लुप्त हो गया था।

घर छोटा होने के कारण छाया कहती है जब कभी रात को नींद खुल जाती है तो मेरा शराबी भाई,मेरी मामी के साथ...उफ..वह छीना झपटी । रोंगटे खडे हो जाते हैं ।" [५]

अत: छाया का पारिवारिक जीवन बहुत ही बुरी हालत में व्यतीत हो रहा था ।

मोदी को बीतें दिनों को याद दिलानेवाली छाया --

छाया मोदी के कम्पनी में टायपिस्ट की नौकरी करती है । जब वह नौकरी मँागने मोदी के पास गयी थी तो मोदी को अपने बीतें दिनों की याद आती है । क्योंकि मोदी की सरला नाम की पत्नी थी जो शादी होने के बाद कुछ ही दिनों में चल बसी । अत: सरला और छाया,इन दोनों का चेहरा और शरीर का गठन एक जैसा ही था । इसलिय मोदी अपनी प्यारी पत्नी सरला का प्रतिबिंब इसी छाया में देखता है । छाया का स्वभाव,देखकर मोदी कहता है कि --" बिलकुल वैसी ही थी । वही बोलने का ढंग । वहीं चाल । सब कुछ वही । लगा,किसी ने मेरे घावों की पपडी को एकदम नोच दिया हो । खुल गए अचानक पंद्रह साल पुराने घाव ।"[६] स्पष्ट है कि छाया का व्यक्तित्व मोदी को पुराने दिनों की याद दिलाता है ।

प्रेमिका के रूप में छाया --

छाया मोदी की जिस कम्पनी में काम करती थी उसी कंपनी में ही सुदीप नाम का युवक क्लर्क का काम करता था । छाया के ऑफिस के पहले दिन सुदीप काम में उसे सहायता करता है अत: उनमें जान-पहचान होती है । यही जान पहचान प्यार में बदल जाती है । वे दोनों शादी करने का भी फैसला करते हैं,पर छाया स्वयं का घर होने के बाद ही शादी करने का प्रस्ताव सुदीप के सामने रखती है । वह अपने घर का स्वप्न देखती है --" अपना एक छोटासा घर होगा । एक छोटा सा घोंसला- केवल अपना । अपनी सत्ता की एक छत ।"[७] अब वे दोनों घर के लिए

५ डॉ.शंकर शेष - घरौन्दा - पृ.१८ ।
६ वही पृ.७ ।
७ वही पृ.४२ ।

पैसा इकट्ठा करते रहते हैं पर पहली बार जमा किए पैसे बिल्डर खा जाता है। दूसरी बार पास बुक में जमा रक्कम छाया का भाई गोविन्द अमेरिका जाते वक्त ले जाता है,तो तीसरी बार मकान मालिक अपनी बेटी के दहेज के लिए आठ हजार खा जाता है। बार बार आनेवाले घात-प्रत्याघात से उनका साहस टूट जाता है। सुदीप षड्यन्त्र का सहारा लेताहै,पर यही षड्यन्त्र छाया को सुदीप से छीन लेता है। छाया एक असफल प्रेमिका के रूप में दिखाई देती है।

कर्तव्यनिष्ठ छाया --

छाया एक कर्तव्यनिष्ठ स्त्री है। अत: मकान प्राप्त करने के लिए वह बहुतही कर्तव्य तत्परता से नाटक में नजर आती है। जब वह मोदी के साथ विवाहबद्ध होती है तो अपना कर्तव्य समझाकर उनकी सेवा करती रहती है। शादी से पहले भी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति ऊपर उठाने के लिए ही वह अपना कर्तव्य समझाकर नौकरी करतीथी। सुदीप को मोदी ने जब नौकरी से निकाला था तब उसे दुबारा नौकरी पर लगाने का कार्य छाया ही करती है। याने छाया यह एक कर्तव्यनिष्ठ स्त्री है।

चरित्र्य के बारेमें सजग छाया --

छाया अपने चरित्र्य के बारेमें अक्सर सजग रहा करतीथी। सुदीप उसे बार-बार प्राप्त करना चाहता है लेकिन छाया विरोध करती है। वह सुदीप से कहती है कि अपना खुद का मकान होने के बाद ही शादी करेंगे। सुदीप उसे समझाता है कि हमारे जैसे मध्यवर्गीय लोगों का घर याने एक सपना ही है और जब कभी घर मिलेगा ही तब तक हम बूढे हो जायेंगे। वह छाया को बताता है कि शरीर की ताजगी का भी जिंदगीमें एक अर्थ होता है,छाया खूबसूरत मकान में अगर लाशों जैसे टंडे शरीर पास आ भी गए तो क्या फायदा। कॉंक्रीट की दीवारें उनमें ताप नहीं पैदा करेंगी,उल्टे उस स्पर्श में ढेर-सी बर्फ भर देंगी।"[८] छाया सुदीप से कहती है कि -- " मतलब क्या है तुम्हारा। कहना क्या चाहते हो ?

---

८ डॉ.विनय - शंकर शेष रचनावली - पृ.३३३।

घर होने से पहले ही तुमसे .... और दस-पन्द्रह दिनों में स्काध बार किसी सस्ते होटल में ... किसी बगीचे की झाड़ियों में । नहीं, सुदीप, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती ।"[९] याने छाया अपने चरित्रपर किसी भी प्रकार का धब्बा लगाना नहीं चाहती थी । अपने चरित्र के प्रति छाया सजग दीखती है ।

माऊक छाया --

इस नाटक में छाया एक भावनाप्रधान नारी भी दिखाई देती है । क्योंकि उसे जब मालुम होता है कि मकान की झंझटोंमें फँसकर सुदीप के मित्र गुहा ने रेल के नीचे आत्महत्या कर दी तो वह बहुत दु:खी होती है । वह सुदीप से कहती है कि मुझे फ्लैट नहीं चाहिए सुदीप । जाओ,उस चाल का कमरा तय कर लो ।चाहे झोपडपट्टी में जगह तय कर लो लेकिन कुछ करो ।"[१०] अभी मुझे फ्लैट नहीं चाहिए, शो-केस । नहीं चाहीए मुझे गुलाब के फूल,नीले परदे । मुझे चाहिए केवल एक छत । धूप से बचने के लिए,बरसात की मार से बचने के लिए । मुझे चाहिए केवल एक छाया जहाँ निर्भय होकर मैं तुम्हारी बाहोंमें समा सकूँ की हवा मेरी साँस बन सके ।"[११] क्योंकि जिस तरह गुहा की पत्नी ने गुहा को खोया था,उसी तरह छाया सुदीप को खोना नहीं चाहती थी । इसलिए वह भाव-विभोर होकर सुदीप से किसी भी तरह का मकान ढूँढने को कहती है क्योंकि किसी भी किंमत पर वह सुदीप को खोना नहीं चाहती थी । यहाँ छाया की माऊकता दृष्टिगोचर होती है ।

ममतामयी बहन --

छाया अपने तथा अपने प्रेमी सुदीप के मकान के लिए पैसे बचाकर रखती थी । पहली बार बिल्डर पैसे खा जाता है तो दूसरी बार उसका भाई गोविन्द अमरिका यात्रा के लिए उनके पास पैसे माँगता है, तब छाया द्विधा में फँस जाती है क्योंकि उसने कितने संकटों का मुकाबला करके मकान के वास्ते पैसे जमा किये थे । लेकिन उनका

---

९ डॉ.विनय : शंकर शेष रचनावली - पृ.३२७ ।

१० वही पृ.३३८ ।

११ वही पृ.३३८ ।

दूसरा मन कहता था कि भाई को पैसे देने चाहिए । अत: वह अपने मकान का विचार छोड देती है और अपने भाई गोविन्द को पूरे पैसे देती है । इसी तरह छाया अपने भाई गोविन्द के लिए अपना सब कुछ नौछावर कर देती है । यहाँ छाया ममतामयी बहन के रूप में दिखाई देती है ।

त्याग की मूर्ति --

छाया में अन्यतम त्याग की भावना है,क्योंकि वह अपने त्याग के कारण ही स्वयं का मकान प्राप्त करने के लिए पैसा इकट्ठा कर पाती है । वह पुरानी साड्यिाँ पहनकर दिन काटती रहती है । अपने लंच के समय वह सिर्फ बडा-पाव ही खाती थी । फजूल पैसा वह नहीं खर्च करती । त्याग के कारण ही छाया ने कितनी मेहनत से इकट्ठे किए हुए पैसे अपने भाई गोविन्द के अमरिका यात्रा के लिए देती है । उसी तरह वह अपनी पति सेवा के लिए सुदीप जैसे प्रेमी को भी त्याग देती है । इस पूरे नाटक में छाया की त्यागी वृत्ति हमारे सामने आती है ।

पत्नी के रूप में छाया --

छाया मोदी की कंपनी में टायपिस्ट की नौकरी करती थी । उसी कंपनी में सुदीप नाम का एक क्लर्क था । अत: इन दोनों में प्यार हो जाता है । वे शादी करना चाहते हैं लेकिन उनके सामने घर की समस्या होती है । वह मकान प्राप्त करने के लिए बहुत सारे प्रयत्न करते हैं लेकिन उन्हें घर नहीं मिलता वे असफल हो जाते हैं । सुदीप को तो शादी की जल्दी थी अत: उसे किसी न किसी तरह घर चाहिए था । वह एक षड्यन्त्र रचाता है और उस षड्यन्त्र में वह छाया को भी साथ लेता है । सुदीप छाया को मोदी के साथ शादी करने के लिए कहता है । क्योंकि मोदी दिल का मरीज है । उसे दो बार दिल के दौरे आ भी चुके हैं ।अत: तीसरा दौरा कभी भी आ सकता है । याने मोदी कभी भी मर सकता है । शायद वह जल्दी ही मरनेवाला है,क्योंकि उनकी शारीरिक स्थिति बहुत गिरी हुई है । सुदीप छाया से कहता है कि जब मोदी का अन्त हो जायेगा तब बाद में हम शादी करेंगे । हमे एक दूसरे को पाने के लिए इतना करना आवश्यक ही है । प्यार के चक्कर में फँसने के कारण छाया भी षड्यन्त्र में शामिल हो जाती है और वह

सुदीप के कहने के मुताबिक मोदी के साथ शादी करती है ।

इस तरह इस नाटक में छाया सुदीप की प्रेमिका होकर भी जब मोदी के साथ शादी करती है तब पत्नी की जिम्मेदारी भी वह पूरी ईमानदारी के साथ निभाती है । वह एक ईमानदार पत्नी के रूप में हमारे सामने आती है । अपने पति के साथ उसने धोखेबाजी कभी नहीं की है । वह एक सच्ची पत्नी बनकर जीवन बिताती रहती है ।

सुदीप --

वर्तमान अर्थ विभीषिका के कारण विकृत दृष्टिकोणों को अपनाकर,अपनी जिंदगी को ही नपुंसकता की राह पर ले चलनेवाले आधुनिक युवकों के प्रतिनिधि के रूप में सुदीप चित्रित है । इस दृष्टिकोण की परिपूर्ति की दृष्टि से सुदीप का चित्रण भी सफल है । साथ ही अंत में उसे नपुंसकता को छोड जीवन संघर्ष की ओर उन्मुख दिखा कर आवश्यक परिवर्तन का दिग्दर्शन भी कराया है ।

दानशूर,सार्थक जिंदगी जीने की इच्छा रखनेवाला जिंदादिल इन्सान के रूप में मोदी का चित्रण पूर्ण सफल है ।

अन्य पात्र,कार्यालयीन माहोल के यथार्थ को व्यक्त करने के साथ वर्तमान जिंदगी के यथार्थ का मर्यादित घरों में जीने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इस नाटक में मिश्रा जैसे दूसरों की नुक्ता चीनी करने वाले या दूसरों की हानी की ही सोचने वाले हैं,वैसे चोपडा जैसे फोरास रोडपर या किसी गर्लफ्रेन्ड को कमरे पर लाकर वासनापूर्ति करनेवाले,कीडों के समान जीनेवाले भी हैं । दूसरी ओर गुहा जैसे अपने ` घरौन्दे` के लिए जी जान से कोशिश करते हुए भी अंत में हारकर आत्महत्या का पलायनवादी रास्ता अपनाने वाले सच्चे और दुर्दैवी जीव भी चित्रित हैं । गोविंद जैसा भाई भी है,जो अपनी बहन की जमा पूंजी पर अपने भविष्य का निर्माण करना अपना हक मानता है । कुल मिलाकर अपने उद्देश्य की पूर्ति में आवश्यक पात्रों का चुनाव और उनके व्यक्तित्वों का विकास करने में डॉ.शेष पूर्ण सफल हुए हैं ।

कथोपकथन --

डॉ.शंकर शेष ने अपनी बुद्धि कौशल से घरौन्दा नाटक के संवादोंका आयोजन किया है। इस नाटक में उन्होंने हास्य और करुण भावों को व्यक्त करनेवाले संवाद,संक्षिप्त,सरल,चुटीले,कथाविकास और नाटक कार की उद्देश्य पूर्ति में सहायक होनेवाले संवादों का ही आयोजन किया है।

इस नाटक के संवादों से बँबई की जो हिन्दी भाषा है,उसका भी जीता जागता नमूना देखने को मिलता है जैसे ---

| | | |
|---|---|---|
| सोडावाला | - | बडे बाबू, उसका क्या हुआ ? |
| बडे बाबू | - | किसका ? |
| सोडावाला | - | अरे,वोई.... |
| बडे बाबू | - | वोई ? |
| सोडावाला | - | वोई याने कि वोई |
| बडे बाबू | - | क्या तुम्हारी डिकशनरी में नाऊन... आय मीन संज्ञा नहीं है .... |
| सोडावाला | - | आपका... मेरा मतलब कि आपका यानि कि आपकी उसका सिलेक्शन |
| बडे बाबू | - | यू मीन मेरी साली का ? |
| मिश्रा | - | यह भी कोई पूछने की बात है ? बडे बाबू जिंदा हैं.... |
| बडे बाबू | - | माइंड यूअर स्टेटमेण्ट मिश्रा । और सोडा वाला, आय मीन मिस सोडा वाला मुझे आपका वो चाहिए ? |
| सोडावाला | - | हमारा वो यानी ... |
| बडे बाबू | - | यानि कि हम आपका आऊट पुट देखना मांगता..।[१२] |

१२ डॉ.विनय - शंकर शेष रचनावली - पृ.३२२-२३ ।

ऊपर उद्धृत संवादों में बंबई महानगर की जो भाषा है उसका प्रतिबिंब नजर आता है। कहीं कहीं छोटे छोटे संवाद कथा विकास में सहायक होते हैं। इसका दर्शन हमें छाया और सुदीप के संवादों से होता है --

छाया - अरे,सब चले गए। एक मिनट। बस मैं भी तैयार होती हूँ।

सुदीप - साहब ने क्या कहा ?

छाया - तारीफ कर रहे थे।

सुदीप - यानी तारीफ दिनों-दिन बढती जा रही है।

छाया - जलन होती है तुम्हें।

सुदीप - मैं क्यों जलने लगा। ठीक है,मन बहलाए रहो बेचारे का। जाने कब टपक जाए।

छाया - व्हाट डू यू मीन ?

सुदीप - अगर मिश्रा की भविष्यवाणी ....

छाया - मिश्रा बकवास करता है। चलना नहीं है क्या ?

सुदीप - नहीं।

छाया - क्यों ?

सुदीप - आज कमरा इस लायक नहीं कि तुम्हें ले जा सकूँ।

छाया - मतलब ?

सुदीप - आज चोपडा की गर्लफ्रेन्ड आ रही है।[१३]

इन संवादों से सामाजिक स्थिति का आकलन भी होता है। ये संवाद छोटे होते हुए भी अर्थपूर्ण रहे हैं,साथ साथ ये कथा विकास को भी आगे बढाते हैं।

डॉ.शेष जी ने 'घरौन्दा' नाटक में जिस तरह छोटे तथा प्रभावपूर्ण संवादों का निर्माण किया है, उसी प्रकार कई संवाद स्थिति के अनुसार लम्बे भी बन पडे हैं --

---

१३ डॉ.विनय : शंकर शेष रचनावली - खण्ड दोन - पृ.३२६-२७।

सुदीप : और इस सत्य को जानने के बाद भी शादी करना चाहता है। क्या यह क्रूरता नहीं ? कभी सोचा उसने ? अगर किसी लखपति की जवान लड़की उसकी औरत जैसी ही दिखाई देती तो क्या वह इस प्रकार का प्रस्ताव रखने की हिम्मत कर सकता था ? तुम्हारे सामने उसने प्रस्ताव इसलिए रखा क्योंकि तुम गरीब हो। क्या यह साजिश नहीं है ? साजिश को साजिश से ही मात देनी होगी, छाया। जिस प्रकार हम एक घर का इन्तजार कर सकते हैं, क्या उसको मौत का इंतजार नहीं कर सकते ? जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं जानता हूँ कि तुम मेरे अलावा अब किसी और की हो नहीं सकती। अगर मेरे मन में इतना विश्वास न होता तो मैं यह बात कैसे कहता जिसमें मेरा सबकुछ खो जाने का डर है।" [१४]

सुदीप के इस लम्बे चौड़े संवाद से कथावस्तु में गति निर्माण होती है और साथ साथ ये सुदीप, छाया और मोदी के चरित्र चित्रण में भी सहायक सिध्द होते हैं।

इस रचना के कथोपकथन अपनी सारी विशेषताएँ लिए हुए हैं। संक्षिप्त, फिर भी कथा और चरित्र चित्रण में सहायक, भावोत्कटता के साथ साथ पात्रों की शैक्षिक, सामाजिक तथा मानसिक विशेषताओं को व्यक्त करनेवाले ये कथोपकथन गहरे अर्थ व्यंजक भी हैं।

देश-काल-वातावरण --

`घरौन्दा` का सबसे जीवंत तत्व देश - काल वातावरण है। वर्तमान युग के किसी भी महानगरीय वातावरण का यथार्थ चित्र यहाँ बंबई के रूप में प्रस्तुत हुआ है और वह भी पूर्ण सफलता के साथ। घर की समस्या का चित्रण करनें में यह वातावरण पूर्ण कारगर है। एक कार्यालय और बंगले की पार्श्वभूमि पर चित्रित होनेपर भी पूरी महानगरीय जिंदगी यहाँ कथोपकथनों से अभिव्यक्त हो गयी है।

---

१४ डॉ. विनय : शंकर शेष रचनावली खण्ड दो - पृ.३४५।

शराबी भाई की छोटे कमरे में अन्य सदस्यों के होते हुए पत्नी के साथ छीना-झापटी, महानगरीय चालोंके नारकीय दर्शन कराने में सफल है। होटलों आदि में शारीरिक भूख मिटाने के लिए पहुँचे लोगों के अंग-प्रत्यंगों को नंगा कर देखनेवाली नजरें भी महानगरीय इन्सान के विकृत रूप को उजागर करती हैं। घर के अभाव से विवाह न कर सकने वालों के लिए फोरास रोड चला जाना लडकियों का फॅशनेबल नाम-रूप के साथ कॉलगर्ल बन जीना जीवन की विडम्बना है। अब सेक्स तृप्ती ही बगीचों उपवनों का भी मुख्य उद्देश्य बन गया है। इस प्रकार के संकेत जिस सूचकतासे नाटककारने यहाँ लिए हैं, वे उसके कौशल का दर्शन कराते हैं।

नाटक को नित्य-सुलभ बनाने के लिए कुछ उपकरणोंकी आवश्यकता पडती है। नाटक के प्रथम भाग का समस्त कार्यव्यापार मोदी एण्ड कंपनी` के दफ्तर में घटित होता है। अत: दफ्तर में काम करनेवाले क्लर्क बडे बाबू, मिश्रा, सोडावाला, टायपिस्ट, छाया तथा सुदीप को बैठने के लिए पाँच कुर्सियाँ, पाँच टेबुल हैं। दफ्तर में छाया तथा सुदीप टाइपिस्ट होने के कारण दो टाइपरायटर, कागज, कार्बन, घडी, टेलिफोन, मॅगजीन, एक दो आलमारियाँ, पेपर वेट, टेबुल बेल, फाइल्स आदि। नाटक के दूसरे भाग का समस्त कार्य व्यापार मोदी एण्ड कंपनी के मालिक मोदी के घर के भव्य और आधुनिक ड्राईंगरूम में घटित होता है। वहाँ पर शो-केस में अनेक प्रकार की गुडियाँ उस पर बडा मुरादाबादी फ्लावर पॉट, फूल, टेलिफोन, सोफा उँचे दर्जे का फर्निचर, टेबल, नोटों का बंडल, टेलिफोन रखने के लिए तिपाई, टेपरिकार्डर, इयरफोन्स, माइक, ब्रीफकेस, वसीयत का कागज, लिफाफा, चाय की प्यालियाँ अथवा कप, ट्रे, पत्र, चाबियाँ इत्यादी चीजें होती हैं। इससे वातावरण जीवंत बन गया है।

नाटक के पात्रों की वेशभूषा पर ध्यान केन्द्रित करने पर इस बात की कठिनता महसुस होती है कि` नाटककारने वेशभूषा की कोई स्पष्ट कल्पना नहीं दी है।[१५] अत: पात्रों के अनुसार ही वेशभूषा होगी।` मोदी एण्ड कंपनी` में काम करने वाले बडे बाबू, मिश्रा, सुदीप सभी मध्यवर्गीय परिवार से आए हैं। अत:

---

१५ डॉ. प्रकाश जाधव - डॉ. शंकर शेष का नाटक साहित्य - पृ. १५४।

साधारण क्लर्कों की भाँति उनकी वेशभूषा होगी । छाया तथा सोडावाला टाइपिस्ट तथा क्लर्क हैं । ये दोनों मध्यवर्गीय परिवार से आयी हुई युवतियाँ हैं । अत: साधारण वेशभूषा में ही उन्हें दिखाना होगा । छाया का भाई गोविंद छात्र है । अत: छात्र की तरह उसकी वेशभूषा है । दयाराम मोदी का नौकर है, गरीब है । उसकी वेशभूषा भी नौकर की भाँति ही होगी । मोदी `, मोदी एण्ड कम्पनी` का मालिक है । अत: सूट,बूट,टाई अथवा ऊँची पोशाक में उसे दिखाना आवश्यक है । मोदी के बंगले के माध्यम से छाया का घरौन्दे का सपना भी पूर्ण काव्यमयता और रमणीयता लिए हुए है । उपर्युक्त पार्श्वभूमिपर यह` घरौन्दे ` का चित्रण और भी प्रभावी बन गया है । इसलिए देश-काल-वातावरण की निर्मिति की दृष्टि से यह कृति डॉ.शेष की पूर्ण सफल कृति मानी जाएगी । नाटक में अधिकतर महानगरीय तथा मध्यवर्गीय लोगों का जीवन चित्रण देशकाल वातावरण के निर्माण में सहायक सिध्द हुआ है ।

भाषाशैली --

अपने कथ्य को प्रभावी ढंग से रुपायित करनेवाली प्रस्तुत कृति की भाषा पूर्णत: नाटकीय और सफल है । छोटे-छोटे वाक्य - रूप अपनी व्यंजकता से अर्थ पूर्ण बन गए हैं और ध्वन्यार्थ के चिंतन के रूपों को भी उजागर करते हैं । यथार्थ जीवन का यथार्थ रूप प्रस्तुत करनेवाली इस कृति की भाषा पूर्ण यथार्थ है । और यही उसकी सफलता की कुंजी है ।` गरज साली आदमी को कुत्ता बना देती है ।[१६]* ` पाप केवल एक धारणा है, छाया ।[१७]* * गरीबी अपने आप में एक बीमारी है,छाया, एक सिकनेस है ।*[१८] तथा* मुझे अपना प्रेम दो । अपनी शक्ति दो । जीवन का विश्वास दो ।[१९]* * हम नदी के उस पानी में दुबारा कदम नहीं रख सकते । पानी

---

१६ डॉ.शंकर शेष - धरौन्दा - पृ.४३ ।
१७ वही पृ.४४ ।
१८ वही पृ.६३ ।
१९ वही पृ.५९ ।

हमेशा आगे बढ चुका होता है।[२०] जैसे अनेक कथन तत्कालीन प्रसंगोमें ढेर सारा अर्थ उजागर करने लगते हैं।

डॉ.शेष की परिवर्तनशील माषा में अभिनययोचित चांचल्य नजर आता है।`घरौन्दा` की माषा सरल,स्वामाविक तथा विषयानुकूल है। सम्पूर्ण नाटक में अंग्रेजी शब्दों की प्रधानता है किन्तु वे जानबूझकर नहीं लाए गए हैं। उनका एक निश्चित कारण है।`घरौन्दा` की कथा बंबई जैसे विमिन्नता से विमूषित ऐसे महानगरीय जीवन की कथा है,जिस महानगर में हमारे मारत वर्ष के तथा दुनिया के कोने-कोने से लोग आकर बस गये हैं।`बंबई महानगर की हिन्दी माषा कास्मापोलिटीन माषा बन चुकी है।[२१] अनुकूल माषा प्रयोग से ही बंबई की संस्कृति को दर्शकों तथा पाठकों के सामने रखा है।बंबई के व्यवहार एवं दैनिक जीवन में हम जिस माषा का प्रयोग पाते हैं,वैसी ही माषा हमें डॉ.शेष के`घरौन्दे` नाटक में दिखाई देता है।

डॉ.शंकर शेष की दृष्टि में शब्दों की अपेक्षा मावोंका महत्व विशेष है। सरल,नित्य व्यवहार के शब्दों में मार्मिक मावों को व्यंजना ही डॉ.शंकर शेष की माषा की सबसे बडी विशेषता है। उनकी माषा स्पष्ट,प्रमावशाली, स्वच्छ,चुस्त,मावमयी एवं नाटकोचित है। नाटककार की माषा में सादगी तथा शक्ति दोनों गुणों का होना नाटककार की बहुत बडी सफलता मानी जाती है। डॉ.शंकर शेष की माषा में सादगी एवं शक्ति दोनों गुण पूर्ण रूप से विद्यमान हैं।`घरौन्दा` की माषा में कहीं मी हमें नाटकीय दोष नहीं मिलता। उन्होंने सर्वत्र पात्रों के अनुकूल ही माषा का प्रयोग किया है।`घरौन्दा` के संवाद देश-- काल तथा पात्रों के अनुकूल हैं। इसलिए वे बडे ही स्वाभाविक लगते हैं। बंबई महानगर में स्थित कास्मापोलिटिन लोगों की कास्मापोलिटिन हिन्दी माषा `मोदी एण्ड कंपनी` के दफ्तर में काम करनेवाले क्लर्क के संवादों से स्पष्ट होती है।

---

२० डॉ.शंकर शेष : घरौन्दा - पृ.७९।

२१ डॉ.प्रकाश जाधव : डॉ.शंकर शेष का नाटक साहित्य - पृ.२१०।

डॉ.शंकर शेष ने किसी भी तरह की भाषा को अपने नाटकों में प्रयुक्त किया हो,परन्तु दर्शकों अथवा पाठकों के सम्मुख इस प्रयुक्त भाषा के कारण भाव सम्प्रेषण में कोई बाधा उत्पन्न नहीं हुई है।` घरौन्दा` में स्तरानुकूल भाषा का प्रयोग करने में नाटककार को सफलता मिली है। नाटककारने` घरौन्दा` में खुलकर अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग भी किया है --" क्या तुम्हारी डिक्शनरी में नाऊन.... आय मीन सज्ञा नहीं है ? बोई यानी कि... हूँ ?"[22] यू मीन मेरी साली का ?"[23] माइड यूअर स्टेटमेन्ट मिश्रा। और सोडावाला,आय मीन मीस सोडावाला,मुझे आपका वो चाहिए।"[24] इसी तरह कई जगह अंग्रेजी शब्दों का उपयोग किया गया है। साथ ही साथ उर्दु-अरबी-फारसी शब्दों का भी यहाँ मरसक प्रयोग किया गया है।

डॉ.शंकर शेष ने अपनी भाषा को स्वाभाविक बनाने के लिए जगह-जगह मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग` घरौन्दा` में किया है। इसमें एक ऐसी ध्वनि है,जो अर्थ गाम्भीर्य के साथ साथ वातावरण की सृष्टि एंव चरित्र विकास में पूर्ण है। नाटककारने इन मुहावरों तथा कहावतों को जन-जीवन में से ढूंढ कर हमारे सामने रखा है। उदाहरण के लिए देखिए हर कोई दुनियाँ को अपने ही नजरिए से देखता है।.... हमारी समस्या है गरीबी के रेगिस्तान में महत्वाकां-- क्षाओं का कमल खिलाने की जिद।... कब मरेंगे बाबा और कब बटेंगे बैल आदि-

` अरे कलर्क योनी के शुध्द जीवों।"[25] तथा` मजदूरों से कम तनख्वाह पाकर भी मजदूर कहलाने से नाक-भौं सिकोडने वाले हम... त्रिशंकु की संतान हैं... त्रिशंकु की संतान है।"[26] कुशल भाषा के प्रयोग से डॉ.शंकर शेष ने मध्यवर्गीय

---

२२ डॉ.शंकर शेष - घरौन्दा - पृ.१ ।
२३ वही पृ.१ ।
२४ वही पृ.१ ।
२५ वही पृ.२२ ।
२६ वही पृ.२३ ।

परिवार के जीवन को बड़े मार्मिक ढंग से सूक्ष्म अंकन कर भाषा में नव जीवन भर दिया है। `घरौन्दा` नाटक की भाषा बंबई जैसे महानगर की कास्मापोलिटिन भाषा का एक अच्छा प्रयोग है।

पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग से नाटककारने हास्य-व्यंग्य भी उपस्थित किया है। सोडावाला, बड़े बाबू, मिश्रा, की भाषा ऐसे ही व्यंग्य कसती है, श्लेष के आधारपर हास्य भी पैदा करती है। आवश्यकतानुसार और पात्रानुकूल अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने से वातावरण निर्मिति के साथ-साथ यथार्थ का भी बोध होता है। गुहा की पत्नी के पात्र की भाषा, मोदी की भाव-विव्हलता, छाया का घरौन्दे का सपना, जैसे स्थानोंमें भाषा सहज काव्यमय और भावोत्कट बन गयी है, जो लेखकीय कौशल को, भाषा प्रभुत्व को उजागर करती है। मुहावरों का प्रयोग यहाँ नगीनों का काम करता है।

निष्कर्षत: भाषाशैली की दृष्टि से भी यह रचना पूर्ण सफल है।

<u>उद्देश्य :</u>

महानगरीय मकान समस्या की भयावहता और उससे उत्पन्न मानव जीवन में व्याप्त नाटकीयता के साथ अनादि काल से मानव मन में जगी `घरौन्दे` यथार्थता चित्रित करना इसका उद्देश्य रहा है। शादी तथा घर की यथार्थता छाया ने कैसे उजागर की है देखिए --" त्याग। हूँ.... लोग शादी करते हैं तो त्याग नहीं करते, अपनी जरूरत पूरी करते हैं। अगर लोग पैसा बचाकर मकान लेते हैं, तो त्याग नहीं करते, मौसम की मार से बचने और अपनी गृहस्थी के फैलाव का इंतजाम करते हैं।.... मुझे हमेशा लगा कि मैं वही कर रही हूँ जो जिंदगी से लडनेवाला हर साधारण आदमी करता है।"[२७] अत: जीवन के संघर्ष का सहज रूप उजागर कर, उर्जस्वित बन लडते जाने के मानव के सहज धर्म का चित्र आँकना और उसे

---

२७ डॉ. शंकर शेष : घरौन्दा - पृ.७९।

मावोत्कटता से सजाना सँवारना जिंदगी का सत्य है, यह दिखाना इसका उद्देश्य है। इसमें डॉ.शंकर शेष पूर्ण सफल हो गये हैं।

नाटककार भारतीय स्त्री के संस्कारों के महत्व का प्रतिपादन भी प्रस्तुत नाटक में करता है। सुदीप के शॉर्टकट की साजिश में शामील होकर उसके कहने पर ही छाया अपने 'घरौन्दे' की मोहक कल्पना को साकार करने के लिए बॉस मोदी से विवाह कर बैठती है। पर विवाह के पश्चात ही उस में स्थित भारतीय स्त्री के संस्कार अवचेतन से चेतन में बदल जाते हैं और उसे आत्ममंथन के लिए बाध्य करते हैं। इसलिए सुदीप से हाथ छुडा कर वह उससे प्रश्न कर बैठती है -- " क्या स्पर्श के भी संस्कार होते हैं, सुदीप ? " [२८]

नाटककार डॉ.शेष ने मध्यवर्गीय जीवन एवं उनकी सभ्यता के चित्रण के उद्देश्य से लिखा नाटक 'घरौन्दा' मनुष्य जीवन की सच्ची जिंदगी बन गया है। सुदीप का एक कथन ही नाटककार के उद्देश्य को हमारे सामने प्रस्तुत करता है -- हमारी समस्या है गरीबी, शायद गरीबी भी नहीं। हमारी समस्या है मध्यवर्गीय नैतिकता का बोझ। " [२९]

डॉ.शंकर शेष प्रस्तुत नाटक के उद्देश्य में पूर्ण सफल नजर आते हैं।

अभिनेयता --

नाटककार डॉ.शंकर शेष की 'घरौन्दा' कृति अभिनय क्षमता की दृष्टि से सफल और चुनौति भरी है। चल चित्र में मोदी के चरित्र के लिए डॉ.श्रीराम लागू जैसे एक सामर्थ्यशाली अभिनेता को चुना गया था और उन्होंने उस व्यक्तित्व को अमर बना दिया है। इससे इस कृति की अभिनय क्षमता का अंदाज लगाया जा सकता है। क्रियात्मक रूपों से मावात्मक तरल, संवेदनशील सात्विक अभिनय के लिए

---

२८ डॉ.शंकर शेष : घरौन्दा - पृ.५५।

२९ वही पृ.१८।

यहाँ काफी गुंजाईश है और समर्थ अभिनेता ही उन्हें संभाल सकते हैं । अत: इसकी अभिनय क्षामता निर्विवाद है ।

डॉ.शंकर शेष जी ने अभिनेयता को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए भी अपनी बुद्धि का उपयोग किया है । जैसे --` छाया से रुपये लेकर उसका भाई गोविंद जब चला जाता है,तब छाया अकेली अपने दफ्तर में टाइप करने लगती है । जब वह टाईप करती है,तब गुहा की पत्नी अनुराधा के पत्र की प्रतिध्वनि उसे सुनाई देती है। गुहा की पत्नी के पत्र की प्रतिध्वनि के तूरन्त बाद मोदी के शब्द भी उसके कानों में गूंजते हैं । इससे अभिनेयता अधिक प्रभावपूर्ण बनी है ।` [30]

` घरौन्दा` में केवल आठ ही पात्र हैं । पात्रों का जमघट न होने से अभिनय करने के लिए पात्रों का चयन करने में असुविधा नहीं होती । रंगमंचपर उपस्थित सभी पात्रों को नाटककार सक्रिय दिखाता है । प्रत्येक पात्र को अपना अभिनय करने के लिए उचित अवसर प्राप्त हुआ है । सुदीप ,बड़े बाबू, मिश्रा,मोदी, दयाराम तथा गोविन्द ये छ: पुरूष पात्र हैं । सोडावाला और छाया ये दो स्त्री पात्र हैं । नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होने से दर्शकों का ध्यान इधर-उधर नहीं बंटता । अत: नाटककार द्वारा पात्रों के चरित्रांकन में भी पूर्ण व्यवस्था दिखाई देती है । डॉ.शंकर शेष ने` घरौन्दा` के सभी पात्रों के साथ पूर्ण न्याय कर पात्रों को प्रभावी बनाया है । अभिनय की दृष्टि से नाटक की संवाद योजना तथा पात्र-योजना अत्यन्त सफल है । अत:` घरौन्दा` की अभिनय क्षामता निर्विवाद है ।

रंगमंचीयता -

डॉ.शंकर शेष का नाटक` अनिकेत` जो` घरौन्दा` शीर्षक से प्रकाशित हुआ है,अभिनय के साथ मंचीयता के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर चुका है ।` घरौन्दा` के अनेक मंचन विविध नाट्य संस्थाओं द्वारा हो चुके हैं ।अभिनेयता की दृष्टि से सफल` घरौन्दा` नाटक की कथा संक्षिप्त है परन्तु नाटक में घटित

---

३० डॉ.प्रकाश जाधव - डॉ.शंकर शेष का नाटक साहित्य - पृ.२५९ ।

विभिन्न घटनाओं के आरोह तथा अवरोह से इसकी कथा गतिशील बनी हुयी है। `घरौन्दा` की कथावस्तु पर फिल्म बनी है,जिसका निर्देशन किया है श्री भीमसेन ने।`घरौन्दा` का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त होते हुए भी अत्यन्त सफल एवं प्रभावशाली है।

`घरौन्दा` नाटक को दो भागों में विभाजीत किया है। दोनों भागों का दृश्यस्थान अलग अलग है। प्रथम भाग का दृश्य स्थान `मोदी एण्ड कम्पनी` के दफ्तर का है,तो दूसरे भाग का दृश्य स्थान `मोदी एण्ड कम्पनी` के मालिक मोदी के घर के भव्य और आधुनिक ड्राइंगरूम का है। कालातर का परिवर्तन दिखाने के लिए नाटककारने `ब्लैक आऊट` पध्दति का उपयोग किया है। दोनों भागों में `ब्लैक आऊट` से इस प्रकार के कालांतर का परिवर्तन होता रहता है। दर्शकोंको इससे समय के अन्तराल की स्पष्ट कल्पना आती है।`ब्लैक आऊट` के बाद रंगमंचपर आने वाले प्रकाश से दृश्य में कोई परिवर्तन नहीं होता, पर व्यक्ति के कार्यव्यापार में बदल अवश्य दिखाई देता है। नाटक के दोनों दृश्य स्थान अलग अलग सजाने पडते हैं। प्रथम भाग का दृश्य स्थान `मोदी एण्ड कम्पनी` का दफ्तर होने से रंगमंच की सजावट दफ्तर की भाँति करनी होगी। नाटक के प्रथम भाग की सभी घटनाएँ दफ्तर में ही घटित होती हैं।

रंगमंच की साज सज्जा के लिए कुर्सियाँ,टेबल्स,अलमारियाँ,टाइपरायटर, कागज,कार्बन,फोन,पेन आदि की आवश्यकता होती है। रंगमचं पर दफ्तर का दृश्य है, पर मोदी का केबिन अलग होने से केबिन नया दरवाजा ,रंगमंचपर आवश्यक होता है। दूसरे भाग का दृश्य स्थान मोदी के घर का ड्राइंग रूम है। ड्राइंग रूम भव्य है और आधुनिक है। नाटक के दूसरे भाग की सभी घटनाएँ मोदी के घर के ड्राइंग रूम में घटित होती हैं। रंगमंच की साज सज्जा के लिए शो-केस,शो-केस में अनेक प्रकारकी गुडीयाँ,बडा मुरादाबादी फ्लावर पाट,फोन,सोफा,कुर्सियाँ , टी-पाय,फूल आदि ड्राइंग रूम की शोभा बढाने के उपकरन होना आवश्यक है। जो की आसानी से जुटाये जा सकतें है।

वैसे देखा जाए तो दोनों प्रकार के रंगमंच की साज सज्जा में विशेष रूप से रंग सज्जा की उतनी आवश्यकता नहीं है। रंगमंच को कम से कम साधनों से

सजाने की डॉ.शेष की विशेषता से उनके नाटक के मंचन में कोई कठिनाई निर्माण नहीं होती । रंगमंचीय सरलता के साथ नाटककारने रंगनिर्देशन भी दिया है । पात्रों की बदलती हुई भाव-भंगिमाओं का संकेत नाटककार स्वंय यथास्थान करता है । इसलिए नाटक के मंचन के समय निर्देशक को मदद ही होती है । चलचित्र तंत्र या दूरदर्शन का फिल्माकंन तंत्र यहाँ प्रयुक्त हुआ है फिर भी इस की मंचीयता में बाधा नहीं आयी है । ` एक और द्रोणाचार्य ` के समान ही प्रकाश योजना का उपयोग करने की दृष्टि से डॉ.शेष कदम उठाते रहे थे । Aइसमें प्रकाश योजना के माध्यम से दृश्य परिवर्तनोंको सुचना, व्यक्तित्व में निखार लाने के लिए स्पॉट लाईट योजना, फ्रीण्ड, डी फ्रीण्ड जैसे प्रयोग रंगमंचीय सुलभता के निदर्शक हैं । कल्पक रंगकर्मी और सहृदय निर्देशक अपनी कल्पनाशीलता से इसका उत्कट और प्रभावी मंचन प्रस्तुत कर सकते हैं । एक दृश्यबंध पर प्रकाश - योजना के द्वारा कालांतर का संकेत भी दिया जा सकता है और कथावस्तु में व्याप्त काल परिवतेन दर्शाये जा सकते हैं । छाया प्रकाश और पार्श्वसंगीत का उपयोग इसकी रंगमंचीयता को उत्कट रूप प्रदान कर सकते हैं । अत: रंगमंचीयता की दृष्टि से भी यह कृति पूर्ण सफल है ।

शीर्षक --

` घरौन्दा` यह शीर्षक काव्यमय है, श्रवण-रमणीय और स्वप्निलता का सूचक है। वही पूरी कथा के तथा उसके उद्देश्य के साथ पूर्ण मोल रखता है और अर्थ व्यंजक है । अत: इसे भी नाटक की सफलता का द्योतक माना जाएगा ।

निष्कर्ष --

डॉ.शंकर शेष के घरौन्दा नाटक की कथावस्तु संक्षिप्त होते हुए रोचक है। दर्शकों की उत्सुक्ता नाटक में अन्ततक बनी रहती है। आगे की सम्भावनाओं के प्रति दर्शक अन्त तक उत्सुक रहता है कि देखे नाटक में आगे क्या होता है ? कथा के आरम्भ में छाया और सुदीप अपने घरौन्दे के सुन्दर स्वप्न को संजोते है। कथा के मध्य में वे दोनों इस स्वप्न की पूर्ति के हेतु संघर्ष करते हैं कथा का अन्त शोकमय बन गया है। यह नाटक नायिका प्रधान है,जिसमें प्रमुख नारी पात्र है छाया और अन्य सात पात्र है। कुलमिलाकर इस नाटक में आठ पात्र हैं। इसमें संवाद संक्षिप्त,फिर भी कथा और चरित्र-चित्रण में सहायक हैं। भावोत्कटता के साथ-साथ पात्रों की शैक्षिक,सामाजिक तथा मानसिक विशेषताओं को व्यक्त करनेवाले ये कथोपकथन गहरे अर्थ व्यंजक भी हैं। इस नाटक की भाषा पूर्णतया नाटकीय है,व्यंग्य से भरी है। नाटककारने कई-कई अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ ऊर्दु ,फारसी शब्दों का प्रयोग किया है कहीं-कहीं मुहावरे भी दिखाई देते हैं। महानगरीय मकान समस्या की भयावहता और उससे उत्पन्न मानव जीवन में व्याप्त नाटकीयता के साथ अनादि काल से मानव मन में जागी घरौन्दे की असली धारणा चित्रित करना इसका उद्देश्य रहा है। यह नाटक अभिनेयता तथा मंचीयता की दृष्टि से भी सक्षम है। इस नाटक का शीर्षक भी अर्थपूर्ण हैं। कुलमिलाकर डॉ.शेष के घरौन्दा नाटक का शिल्प अनेक विकासमान कलाविष्कार का परिचायक सिध्द होता है।